वैवाहिक जीवन में बढ़ रही दुरियों से मानसिक तनाव का बढ़ना

सत्य बाला

विवाह भारतीय जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। विवाह से ही दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। डॉ. नीरजा राजकुमार के मतानुसार, "विवाह जीवन की शारीरिक तथा भावात्मक आवश्यकता है। यह एक सामाजिक संस्था है, जिसके द्वारा परिवार का विकास होता है। स्त्री–पुरुष के स्वाभाविक और सहज आकर्षण को संयमित और मर्यादित करने की रीति ही विवाह है।"

समाज द्वारा मान्यता प्राप्त तरीके से स्त्री–पुरुष की यौन–संबन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, उसे एक निश्चित ढंग से नियंत्रित करने तथा स्थित रखने और परिवार को स्थायी रूप देने के लिए विवाह रूपी संस्था का जन्म हुआ। शम्भूलाल दोषी के मतानुसार, "भारतीय समाज में यदि परिवार एक सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाई है तो इसका अस्तित्व विवाह द्वारा ही रहता है। विवाह की संस्था सभी समाजों में होती है। इसका मूल है प्रजनन द्वारा मनुष्य जाति की बिरादरी को बनाये रखना।"